हिन्दी साहित्य
समय से साक्षात्कार

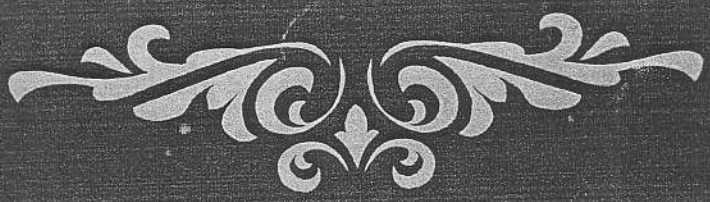

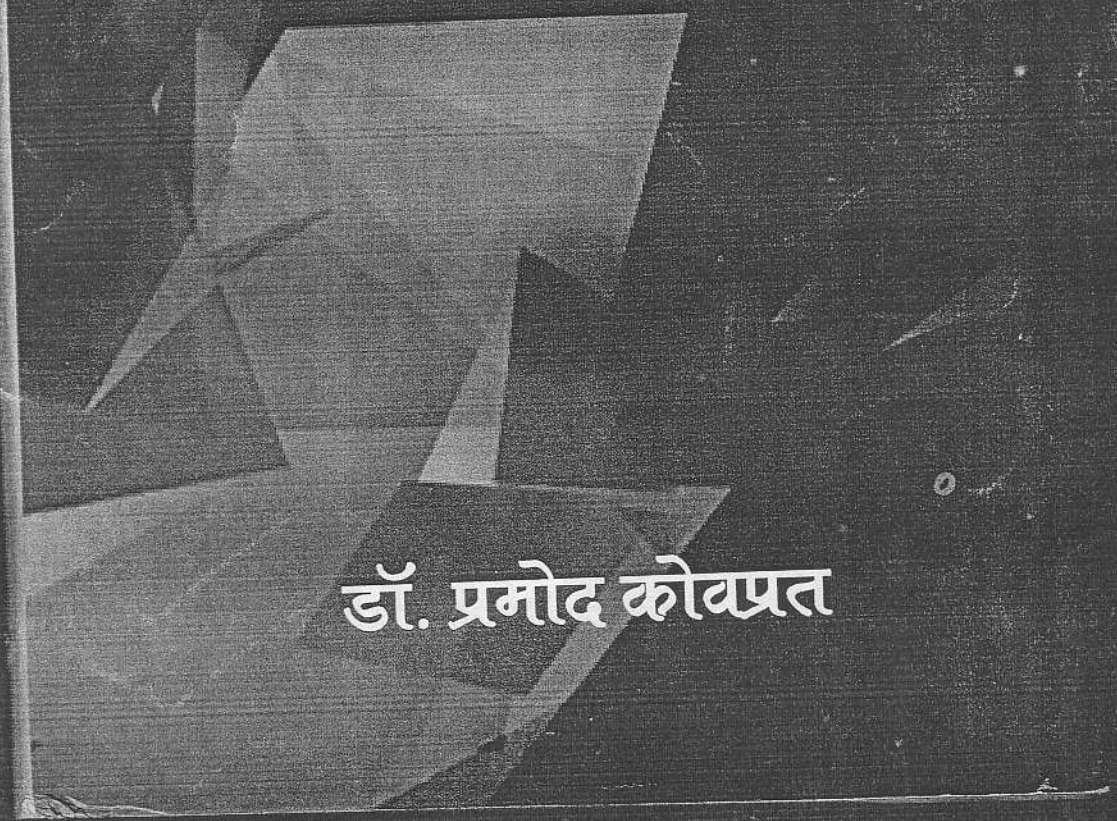

डॉ. प्रमोद कोवप्रत

HINDI SAHITYA : SAMAY SE SAKSHATKAR

Edited By : Dr. Pramod Kovaprath

Price Rs. : Four Hundred Only

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के
वित्तीय अनुदान से प्रकाशित

ISBN : 978-93-83682-55-3

पुस्तक	:	हिन्दी साहित्य : समय से साक्षात्कार
संपादक	:	डॉ. प्रमोद कोवप्रत
प्रकाशक	:	अमन प्रकाशन 104A/80C रामबाग, कानपुर – 208012 Ph. 0512-2543480 (Off.) 0512-2543480 (Fax) Mob. 09839218516, 08090453647
संस्करण	:	प्रथम, 2015
©	:	संपादकाधीन
मूल्य	:	₹ 400.00 मात्र
शब्द–सज्जा	:	रिचा ग्राफिक्स, यशोदा नगर, कानपुर
मुद्रक	:	साक्षी आफसेट, यशोदा नगर, कानपुर

भूमिका

साहित्य की प्रेरणाभूमि समय तथा समाज है। दूसरे शब्दों में समय तथा समाज की अभिव्यक्ति ही साहित्य है। इसलिए 'अंधकार है जहाँ आदित्य नहीं, मुर्दा है वह देश जहाँ साहित्य नहीं' बताया गया है। हिन्दी साहित्य का इतिहास एक हजार साल से अधिक पुराना है। लेकिन हम देख पाएँगे कि समय तथा समाज की छवि हर युग में साहित्य में प्रतिबिंबित होती रही है। इसलिए यह बेशक कह सकते हैं कि साहित्य समय से साक्षात्कार करता रहता है।

'हिन्दी साहित्य : समय से साक्षात्कार' नामक इस पुस्तक में कुल पच्चीस आलेख शामिल हैं। ये साहित्य की विविध विधाओं तथा विषयों से जुड़े हुए हैं। समकालीन ज्वलंत समस्याओं की चर्चा इसमें आ गयी है। हिन्दी रचनाकार समय के प्रति काफी जागरूक हैं। संस्कृति, दलित-विमर्श, स्त्री-विमर्श, ग्रामीण संवेदना, हाशियेकृत चेतना, विस्थापन की समस्या, मूल्य-चिंतन, पर्यावरण विमर्श, उत्तर आधुनिक परिदृश्य, वृद्ध-विमर्श, मनुष्यता की चेतना, मुक्ति की आकांक्षा आदि कई मुद्दे इस पुस्तक में देख सकते हैं।

सन् 2013 में कालिकट विश्वविद्यालय के अकादमिक स्टाफ कॉलेज में हिन्दी का एक पुनश्चर्या संपन्न हुआ था। उसका संयोजक बनने का तथा कई प्रतिभागी मित्रों से अंतरंग संबंध स्थापित करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। अधिकतर उन प्राध्यापक मित्रों के लेख इसमें शामिल हैं। साथ ही भारत के अन्य कई विद्वान तथा लेखक के लेख भी हैं। कालिकट विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग की अध्यक्षा डॉ. फातिमा जीम, दलित रचनाकार डॉ. सुशीला टाकभौरे, पश्चिम बंगाल की डॉ. विभा कुमारी, गोवा की डॉ. वृषाली मांद्रेकर, केरल विश्वविद्यालय के डॉ. दीपक आदि के प्रति मैं हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ। इस पुस्तक योजना में शामिल सभी मित्रों के प्रति तहे दिल से आभारी हूँ।

01-06-2014

डॉ. प्रमोद कोवप्रत
हिन्दी विभाग
कालिकट विश्वविद्यालय
केरल - 673 635
मो. 09447887384

अनुक्रम

- हिन्दी साहित्य पर पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव 09
  – डॉ. प्रमोद कोवप्रत
- दलित लेखन की केन्द्रीय अपेक्षाएँ 12
  – डॉ. सुशीला टाकभौरे
- परिधि का सरोकार तथा हशिये पर ज़िन्दगी 17
  – डॉ. विभा कुमारी
- मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में ग्रामीण संवेदना 26
  – डॉ. हेना
- समकालीन कहानी : समय से साक्षात्कार 40
  – डॉ. सिन्जु. ए.
- खेत, गाँव एवं विस्थापन : 'हलफनामे' में 46
  – रम्या. एस्.
- वर्तमान हिन्दी कविता में राजनीतिक व्यंग्य 50
  – डॉ. जयरूपन. पी. एन.
- समकालीन नारीवादी उपन्यास 59
  – डॉ. दीपक के. आर.
- विष्णु प्रभाकर के एकांकियों में गाँधीवाद 66
  – डॉ. सजीव. के.
- मैत्रेयी पुष्पा के कथा-साहित्य में संघर्षरत नारी 78
  – डॉ. सी. बालसुब्रहम्णयन
- पर्यावरण, संस्कृति और साहित्य 87
  – डॉ. ए. एस. सुमेष
- 'पहला गिरमिटिया' : एक अध्ययन 92
  – डॉ. प्रीता. एस. आर

पहला गिरमिटिया : एक अध्ययन

डॉ. प्रीता, [illegible]

भूमण्डलीकरण और वैश्वीकरण के इस दौर में आज समाज में [illegible] शिथिल हो रहा है। साहित्य के द्वारा ही हम उन मानवीय मूल्यों की पुन[illegible] सकते हैं। वर्तमान युग में सच्चे रोल मॉडलों (मार्गदर्शक) का अभाव है। [illegible] के चरित्रांकन के अंधकार में भटके हुए वर्तमान पीढ़ी और आने वाली [illegible] आशावादी दृष्टिकोण और प्रकाश किरणों से अचंचल आगे बढ़ने की प्रेरणा [illegible] है। 'पहला गिरमिटिया' उपन्यास में मोहनदास करमचंद गाँधी के कूली [illegible] महात्मा गाँधी बनने की जटिल जीवन और दर्शन को संवेदना और समझ [illegible] पहचानने में मदद करेंगी।

मोहनदास करमचन्द गाँधी को अब्दुल्ला एण्ड कम्पनी ने सालाना [illegible] पौण्ड के वेतन पर गिरमिट के अनुबन्ध पर दक्षिण अफ्रीका बुलाया था। [illegible] एण्ड कम्पनी नेटाल का सबसे पुराना और बड़ा भारतीय प्रतिष्ठान माना [illegible] दक्षिण अफ्रीका आकर मोहनदास को पता चलता है कि वह दादा अब्दुल्ला [illegible] में भले ही सफेद हाथी हो, साम्राज्यवादी शासकों की नज़र में एक कूली [illegible]

अफ्रीका पहुँचते ही गाँधी की पहली टक्कर यहाँ की न्यायपालि[illegible] मजिस्ट्रेट ने अपने जातीय अभिमान में उन्हें पगड़ी उतारने का आदेश [illegible] अदालत के उस अजनबी वकील ने ठुकरा दिया और अदालत छोड़कर [illegible] गया। मोहनदास ने इस घटना पर एक मसौदा तैयार करके अखबार में छापने [illegible] उसकी यह पहली चिट्ठी वहाँ के प्रमुख अखबार में छप आयी। मोहनदास [illegible] पर कुछ अखबारों में प्रतिक्रियायें भी छपी थीं। यह घटना ब्रिटिश [illegible] गाँधी की पहली चुनौती थी। इसके बाद गाँधी को एक गोरे द्वारा ट्रेनों से [illegible] की प्रसिद्ध घटना घटी। इस प्रकार की और भी अनेक अपमानजनक, [illegible] घटनाएँ घटती रहीं, पर गाँधी उनसे बिना विचलित हुए अपनी लड़ाई [illegible]

अपमान की पीड़ा से भरा वह दक्षिण अफ्रिका में रह रहे भारतीयों [illegible] पर नज़र दौड़ाता है, जिनके लिए अपमान रोज़ का किस्सा है। गिरमिटिया [illegible] पालने के लिए और व्यवसायी दो पैसा कमाने के लिए निरंतर अपमान [illegible] अभिशप्त हैं। वह देखता है कि व्यवसायी समुदाय खुद अपमानित होते [illegible] गिरमिटिया मज़दूरों के अपमान से कोई सरोकार नहीं रखता था। इस पर गाँधी [illegible] अपना मत इस प्रकार व्यक्त किया था, ''हमारे लोग गरीब हैं, उनका [illegible]

[illegible] नहीं, लेकिन वे अपने अस्तित्व से जुड़े मूल्यों को समझते हैं, उनकी [illegible] बरकरार है.... इसीलिए वे इतनी दूर से रोटी कमाने यहाँ आये हैं।'' अपमान [illegible] उन्हें अनुभव होता है कि उनके अपने भारतीय समाज में वंचितों, [illegible] अछूतों को किस कदर अपमानित किया जाता है। उनकी नज़र वतनियों की [illegible] स्थितियों पर भी जाती है। दक्षिण अफ्रीका में गाँधी जी ने प्रमुखतः [illegible] के खिलाफ ही अपनी आवाज़ उठायी थी।

[illegible] गाँधी पहला भारतीय था जिसने नेटाल या पूरे दक्षिण अफ्रीका में [illegible] के रूप में नामजदगी को जुर्रत की थी। कई प्रकार की कठिनाईयों के [illegible] गाँधी का आवेदन स्वीकार किया गया और उपनिवेश के कानून के अन्तर्गत [illegible] एडवोकेट के रूप में पंजीकृत किया गया।

गाँधी दक्षिण अफ्रीका में भारतीय समुदाय के लिए अपमान स्थितियों और [illegible] के खिलाफ समुचित पत्र, प्रत्यावेदन और प्रस्ताव तैयार करने, उन पर सभी [illegible] और हस्ताक्षर लेने में दिन-रात काटते हैं। साथ ही अपने निजी आचरण [illegible] स्थितियों और कानूनों को स्वीकार नहीं करते। उसके बदले में सत्ता [illegible] कितना भी प्रकोप झेलना पड़े। बाकी के भारतीय समुदाय को भी भरसक [illegible] आचरण करने के लिए प्रेरित करते हैं। मताधिकार के सम्बन्ध में उनका [illegible] ''मताधिकार प्राप्त करके हम दमन और शोषण के खिलाफ अपनी आवाज़ [illegible] पहुँचा सकते हैं।'' ''मताधिकार संशोधन विधेयक के विरोध में दस्तखत [illegible] के सिलसिले में उन्हें बस्ती-बस्ती घूमना पड़ा था।''

गाँधी ने दक्षिण अफ्रीका के सभी गिरमिटियों को एकजुट करके संगठन की [illegible] थी। और उस संगठन का नाम था 'नेटाल इण्डियन काँग्रेस'। गाँधी जी ने [illegible] इसलिए रखा क्योंकि इंग्लैण्ड के टोरी 'काँग्रेस' नाम से चिढ़ाते थे। लेकिन [illegible] काँग्रेस नयी चेतना और जीवन का संचार कर रही थी और गाँधीजी इस [illegible] को उसमें जोड़ना चाहते थे जिससे प्रेरणा और निर्देशन पा सकें। नेटाल [illegible] काँग्रेस का उद्देश्य यह था ''जिस दिन भारतीयों को यहाँ भी वही सम्मान [illegible] जो उन्हें भारत में मिलता है, उस दिन काँग्रेस के राजनीतिक उद्देश्य की पूर्ति [illegible]''

गाँधीजी दक्षिण अफ्रिका में अखबार की जरूरत महसूस करने लगे क्योंकि हर [illegible] के लिए उन्हें वहाँ के अंग्रेज़ी अखबारों के पास दौड़ना पड़ता था। उन्होंने [illegible] ओपीनियन' अखबार शुरू किया। डरबन से ही अखबार हिन्दी, तमिल, [illegible] और गुजराती में निकालने की योजना भी बनायी। लेकिन वह सिर्फ अंग्रेज़ी [illegible] गुजराती संस्करण ही निकाल पाये। पत्रकारिता के सम्बन्ध में उनका मत था [illegible] में बड़ी ताकत है। हर सामाजिक बदलाव में उसकी बहुत बड़ी

डॉ. प्रमोद कोवप्रत

जन्म : 1973 केरल के कण्णूर जिले के इरिणाव गाँव में,
शैक्षिक योग्यताएँ : एम.ए. हिन्दी, एम.ए. अंग्रेजी, नेट(यू.जी.सी.), बी.एड., अनुवाद में स्नातकोत्तर डिप्लोमा, पीएच.डी. हिंदी।
प्रकाशित पुस्तकें : भारतीय जीवन-मूल्य और ज्ञानपीठ पुरस्कृत हिन्दी कवि, इक्कीसवीं सदी में अनुवाद : दशाएँ और दिशाएँ, समकालीन हिन्दी कविता का तापमान, शताब्दी कवि : धरती और धड़कन, हिन्दी गद्य विमर्श के नए क्षितिज, हिन्दी में दलित साहित्य का विकास, हिन्दी साहित्य समकालीन परिप्रेक्ष्य, समकालीन हिन्दी साहित्य और नये विमर्श, हिन्दी दलित साहित्य : एक मूल्यांकन, काव्य चयनिका।
रचना सहयोग : राजभाषा हिन्दी प्रगति और प्रयाण, आधुनिक मलयालम साहित्य, युगस्पर्शी कवि पंत, तीसरा प्रभाकर, अनुवाद-अनुभव तथा अवदान, आधुनिक कविता-धार एवं धरातल, आधुनिक हिन्दी साहित्य में जनवादी चेतना, भारतीय साहित्य, राष्ट्रीय एकता और भारतीय साहित्य, फेसज़(अंग्रेजी), हिन्दी कहानी के सौ वर्ष, इक्कीसवीं सदी और प्रेमचंद, कविता का वर्तमान, उत्तर औपनिवेशक विमर्श और हिन्दी कविता। मलयालम में : ज्ञानपीठ पुरस्कृत विजेता, हिन्दी साहित्य का प्राचीनकाल, विश्व साहित्य कोश। अनुवाद : राष्ट्रीय चेतना और मलयालम साहित्य, मलयालम की चर्चित लघुकथाएँ, भारतीय कहानियाँ। काव्य संग्रह: अनुभूतियाँ, धरा से गगन तक।
पत्र-पत्रिकाएँ : राष्ट्रीय स्तर की स्तरीय पत्रिकाओं में सौ से अधिक आलेख एवं अनुवाद प्रकाशित
सम्मान : केंद्रीय हिन्दी निदेशालय(भारत सरकार) का राष्ट्रीय पुरस्कार, इन्द्रधनुष साहित्यिक संस्था, धामपुर, उ.प्र. की ओर से साहित्य गौरव सम्मान 1998, अखिल भारतीय विद्वत परिषद, वाराणसी की ओर से यास्क पुरस्कार 2010, हिन्दी भाषा भूषण 2012, नाथद्वारा, राजस्थान, अनुराग साहित्य सम्मान, लालसोट राष्ट्रीय साहित्यांचल सृजन सम्मान, भीलवाड़ा, राजस्थान
सम्प्रति : असोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, कालिकट विश्वविद्यालय, मलाप्पुरम-673635, (केरल)
स्थायी पता : पोस्ट इरिणाव, कण्णूर, केरल-670301
ईमेल : drpramodcu@yahoo.co.in, drpramodcu@gmail.com
मोबाइल : 09447887384

अ.प्र
अमन प्रकाशन
104-A/80 C, रामबाग, कानपुर-208012 (उ.प्र.)
Ph : 0512-2543480(Off.), Fax : 0512-2543480
Mob : 09839218516, 08090453647
Email : amanprakashan0512@rediffmail.com
Visit Us : www.amanprakashan.com

मूल्य : ₹ 400.00 मात्र

ISBN NO. : 978-93-83682-55-3